एन.सी.ई.आर.टी.

समाचार

जनवरी 2007

अल्पसंख्यकों की शिक्षा के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की चिंता

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.) के 12 सदस्यीय अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की प्रथम बैठक में हुई चर्चाओं के आधार पर अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ हेतु तीन प्राथमिकता-प्राप्त विषय-क्षेत्र निर्धारित किए गए। 16 नवंबर 2006 को हुई बैठक मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा अल्पसंख्यकों की शिक्षा के लिए गठित राष्ट्रीय परिवीक्षण समिति की सिफ़ारिशों के अनुसार आयोजित की गई थी। इसके सदस्य क्षेत्रीय संस्थानों और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों से चुने गए हैं। विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के प्रोफ़ेसर जी.एस. गिल को नोडल अधिकारी और डी.ई.जी.एस.एन. की अध्यक्ष प्रो. नीरजा शुक्ला को संयोजक नियुक्त किया गया है। अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ अल्पसंख्यकों की शिक्षा से संबंधित मुद्दों को समझने और सुलझाने के कार्य में एन.सी.ई.आर.टी. के योगदान को प्रबल बनाने के लिए स्थापित किया गया है।

प्राथमिकता-प्राप्त क्षेत्र

अनुसंधानकार्यों, अनुसंधानकर्ताओं और अल्पसंख्यक संस्थाओं का प्रलेखन।

उद्देश्य

अल्पसंख्यकों की शिक्षा के क्षेत्र में, एन.सी.ई.आर.टी. की भूमिका और योगदान को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए रणनीति तैयार करना।

यह तय किया गया कि यह प्रकोष्ठ सभी राज्यों से सूचना इकट्ठी करके अल्पसंख्यकों की शिक्षा के संबंध में एक विश्वसनीय आधार-सामग्री (डाटाबेस) तैयार करे। यह भी सिफ़ारिश की गई कि एन.सी.ई.आर.टी. ऐसे अनुसंधानकार्यों को बढ़ावा दे, जिनसे अल्पसंख्यकों की शिक्षा से संबंधित गंभीर मुद्दों को अधिक अच्छी तरह समझा जा सके।

अल्पसंख्यक तथा जनजातीय भाषाएं बोलने वाले लोग अक्सर भाषा संबंधी गंभीर असुविधा का सामना करते हैं। हमारे लिए यह समझ लेना ज़रूरी है कि हमारे देश की प्रमुख भाषा, जिसमें अंग्रेज़ी शामिल है, छोटी-छोटी भाषाओं के साथ मिलकर ही, न कि उनकी उपेक्षा करके, उन्नति कर सकती है। कुछ भाषाओं का विकास ही भाषाई दृष्टि से विविध जनजातीय क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा को विशेष रूप से प्रोत्साहन देता है और वहां के जनसमुदायों को उस दिशा में सजग रूप से प्रयत्नशील होने के लिए प्रेरित करता है।

—राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005

विद्या से अमरत्व
प्राप्त होता है।

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं :
(i) अनुसंधान और विकास,
(ii) प्रशिक्षण तथा (iii) विस्तार।
यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों में प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के
आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है—
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

जनजातीय संदर्भ में बहुभाषाई शिक्षा पर आधारित

'जनजातीय संदर्भ में बहुभाषाई शिक्षा पर विशेष रूप से आधारित अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण का कार्यक्रम' नामक परियोजना के अंतर्गत, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग द्वारा एक त्रि-दिवसीय आवश्यकता निर्धारण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम रातू, डाइट; राँची, झारखंड में 17 से 19 अक्तूबर 2006 तक चला।

उद्देश्य

एक ऐसी बहुभाषाई कक्षा में, जिसमें ओरांव, मुंडा आदि भिन्न-भिन्न जनजातीय समुदायों के छात्र पढ़ते हों, मातृभाषा के माध्यम से अध्यापन करने में आने वाली समस्याओं का पता लगाना।

इन सत्रों में हुई चर्चाओं से और विद्यालयों के दौरों के दौरान रेकॉर्ड किए गए प्रेक्षणों से, जनजातीय बच्चों की शिक्षा के संबंध में अनेक मुद्दे उभरकर सामने आए। इनमें भाषाई समस्या के अलावा अन्य अनेक मुद्दे शामिल हैं, जैसे–जनजातीय समुदायों के छात्रों के प्रति अध्यापकों का रुख, कक्षा का वातावरण, शिक्षक-शिक्षार्थी के आपसी संबंध की सीमा; अध्यापक की उपस्थिति, जनजातीय संस्कृति तथा परंपराओं के बारे में अध्यापक का ज्ञान आदि। ये मुद्दे झारखंड के जनजातीय क्षेत्रों में कार्यरत अध्यापकों के लिए प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रम के आधार बनेंगे।

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य, प्रो. नीरजा शुक्ला, डॉ. कानन साधु और डॉ. एस.सी. चौहान ने श्री ए.ए.सी. लाल, भूतपूर्व एन.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्य और प्रो. आर. सचदेव, सी.आई.आई.एल., मैसूर जैसे संसाधन व्यक्तियों के साथ मिलकर, मुंडारी और कुरुख (ओरांव) गांवों के विद्यालयों का दौरा किया। जनजातीय शिक्षा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, झारखंड राज्य शिक्षा परियोजना (एस.एस.ए.) और झारखंड जनजातीय अनुसंधान संस्थान के लगभग 20 शिक्षाकर्मियों एवं विद्वानों के साथ चर्चाएँ की गईं।

समावेशी विद्यालयों के लिए सूचक (इंडेक्स)

इस बात का पता लगाने की आवश्यकता है कि नीतिगत निर्णयों एवं कार्यक्रमों के बावजूद, समवेत कक्षाओं का संचालन क्यों नहीं किया गया और इस पद्धति को अपनाने में क्या-क्या बाधाएं आ रही हैं। विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग ने 'समवेत विद्यालयों के लिए एक सूचक का विकास' नामक एक परियोजना आरंभ की है।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी अध्यापकों, शिक्षा विशेषज्ञों, शिक्षा-प्रशासकों, विद्यालयी छात्रों, अभिभावकों और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ परामर्श करके, समावेशी पद्धति के लिए एक सूचक तैयार करना था।

सूचक के विकास की समग्र प्रक्रिया की योजना बनाने के लिए एक परामर्श समिति गठित की गई। इस समिति में विश्वविद्यालयों, विद्यालयों, गैर-सरकारी संगठनों आदि से अनेक विख्यात विशेषज्ञ शामिल किए गए थे। इस परामर्श समिति की एक बैठक 24 नवंबर 2006 को एन.सी.ई.आर.टी. में आयोजित की गई।

सूचक के विकास के लिए एक संकल्पनात्मक रूपरेखा का सुझाव दिया गया जिसे 'समवेत शिक्षण केंद्रों का विकास–कुछ सूचक' का नाम दिया। सदस्यों ने यह भी सुझाव दिया कि सूचकों के विकास का काम आरंभ करने से पहले देश में प्रचलित कुछ अच्छी पद्धतियों का अध्ययन करना भी ज़रूरी है।

कार्यानुसंधान के विषय पर ग्रामीण क्षेत्रों के अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

अनुसूचित जाति की बालिकाओं के उत्थान पर विशेष बल

अनुसूचित जातियों की बालिकाओं के उत्थान पर विशेष रूप से बल देते हुए, कार्यानुसंधान विषय पर ग्रामीण क्षेत्रों के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए, महिला अध्ययन विभाग द्वारा चार सप्ताह का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 23 नवंबर से 20 दिसंबर 2006 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दो मुख्य घटक थे : अर्थात्, ग्रामीण संदर्भ में अनुसूचित जाति की बालिकाओं के उत्थान के लिए प्रशिक्षणार्थियों को संवेदनशील बनाना, और उन्हें अपनी-अपनी विशिष्ट कार्य-स्थितियों में कार्यानुसंधान करने के लिए तैयार करना। 15 राज्यों और 29 ज़िलों का प्रतिनिधित्व करने वाले बत्तीस प्रशिक्षणार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के, अनेक ख्यातिप्राप्त संसाधन व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम के अंतर्गत भाषण दिए। जिनके फलस्वरूप प्रशिक्षणार्थियों का विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्द्धन हुआ। ये विषय क्षेत्र थे : अनुसूचित जाति की बालिकाओं की प्रस्थिति और उनका उत्थान; कार्यानुसंधान के प्रस्ताव तैयार करना; क्षेत्रगत परिस्थितियों में कार्यानुसंधान के प्रस्तावों को आजमाना, और अपने-अपने राज्यों, विशेष रूप से ज़िलों से संबंधित विशिष्ट समस्याओं के विषय में रणनीतियाँ और अंत:क्षेपी कार्यक्रम कार्यान्वित करना। प्रशिक्षण की कार्यविधि में सतत अंत:क्रिया, विचारोत्तेजन (दिमाग लड़ाना), व्याख्यान एवं चर्चा, सामूहिक कार्य, व्यक्तिगत कार्यभार, वीडियोदर्शन, स्लाइड एवं ऊपरी प्रक्षेपण, शक्ति बिंदु प्रस्तुति, केंद्रीय विद्यालय के संगठन के स्कूलों में प्रायोगिक अध्ययन, 'प्रयास' नामक गैर-सरकारी संस्था का क्षेत्रगत दौरा, दिल्ली के केंद्रीय विद्यालयों में किए गए प्रायोगिक क्षेत्रगत अध्ययन के विषय में सामूहिक रिपोर्टें तैयार करना और प्रस्तुत करना, और अपने-अपने ज़िलों में कार्यान्वित किए जाने वाले कार्यानुसंधान संबंधी प्रस्तावों के ब्यौरे तैयार करना। प्रशिक्षणार्थियों ने प्रस्थिति पत्र प्रस्तुत किए; प्रशिक्षण से पहले ऐसा करना ज़रूरी था। प्रस्थिति-पत्रों में प्रशिक्षणार्थियों के ज़िलों तथा राज्यों में अनुसूचित जाति की बालिकाओं की प्रस्थिति का विवरण शामिल था। ये प्रशिक्षित अध्यापक-प्रशिक्षक छह-आठ महीने के बाद राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान में पुन: उपस्थित होंगे और यह बतलाएँगे कि उन्होंने अपनी कार्यगत परिस्थितियों में कैसा और कितना कार्यानुसंधान किया है। प्रशिक्षणार्थी पाँच-दिवसीय अनुवर्ती कार्यशालाओं में अपने निष्कर्षों के बारे में विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। ये कार्यशालाएँ महिला अध्ययन विभाग द्वारा अगस्त-सितंबर 2007 में आयोजित की जाएंगी। यह परियोजना कार्यक्रम अनुमोदन समिति (पी.ए.सी.) द्वारा अनुमोदित की जा चुकी है।

महिला अध्ययन विभाग द्वारा अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम।

भारतीय महिला 1875-1947 पर वृत्तचित्र

महिला अध्ययन विभाग ने महिला विकास अध्ययन केंद्र और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के सहयोग से, '1875 से 1947 तक भारतीय महिला' विषय पर उस्ताद अमजद अली खां कला परिषद्, भोपाल में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी में भारतीय इतिहास के आधुनिक काल में भारतीय महिलाओं के, विशेष रूप से ऐसी महिलाओं के जिनके फ़ोटोग्राफ़ उपलब्ध थे, दुर्लभ चित्र प्रदर्शित किए गए। मध्य प्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री बलराम जाखड़ ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन दिया। भोपाल के भिन्न-भिन्न विद्यालयों के छात्रों तथा अध्यापकों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। दर्शकों ने प्रदर्शनी की प्रशंसा की और स्वतंत्रता-संग्राम तथा सामाजिक सुधार आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी और उनके अपने परिवारों में उनकी भूमिकाओं को दर्शाने वाले दृश्यों को सूक्ष्म दृष्टि से देखा और सराहा। प्रदर्शों में यह भी चित्रित किया गया था कि सामाजिक सुधारवादी परिवारों में महिलाओं की शिक्षा ने उनके व्यक्तिगत जीवन में कितना परिवर्तन ला दिया था। प्रदर्श पर आधारित प्रश्नावली अध्यापकों तथा छात्रों द्वारा भरी गईं। उन्होंने संबद्ध विषयों पर छोटी-छोटी परियोजनाएं तैयार करने की इच्छा भी व्यक्त की।

भाषा-कौशलों के मूल्यांकन पर अभिविन्यास कार्यक्रम

प्राथमिक तथा उच्चतर प्राथमिक स्तरों पर भाषा-कौशलों के मूल्यांकन पर पूर्वोत्तर राज्यों के प्रमुख विषय विशेषज्ञों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (नीरी), शिलांग द्वारा एन.सी.ई.आर.टी./राज्य शिक्षा संस्थान गंगटोक, सिक्किम में, 6 से 10 नवंबर 2006 तक आयोजित किया गया। पूर्वोत्तर राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा के भिन्न-भिन्न 'डाइट' संस्थानों एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. और राज्य-सरकारों के मानव संसाधन विभाग के छब्बीस संकाय सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इनके अलावा, प्रो. पंचानन मोहंती, अध्यक्ष अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान तथा अनुवाद अध्ययन केंद्र, हैदराबाद विश्वविद्यालय; डॉ. अजित के. वैश्य, अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिलचर, असम; प्रो. जे.पी. बागची, डॉ. एस. यादव और प्रो. ए.के. मिश्र, एन.ई.आर.आई.ई. ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

यद्यपि हम यह दावा करते हैं कि हमारे यहां बहुभाषावाद है और हम उसके अनुरक्षण के लिए कटिबद्ध हैं, फिर भी हमारे यहाँ की अनेक भाषाओं के अस्तित्व को 'खतरा' पैदा हो गया है और उनमें से कुछ तो वास्तव में लुप्त हो चुकी हैं। जब भी हमारे यहाँ किसी भाषा का लोप होता है उसके साथ ही उसकी संपूर्ण साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परंपरा के समाप्त हो जाने की संभावना उत्पन्न हो जाती है।

–रा.पा.रू. – 2005

निम्नलिखित विषयों पर चर्चाएँ हुईं

आकलन, मूल्यांकन और परीक्षण की संकल्पनाएँ,
आकलन/मूल्यांकन और रा.पा.रू. 2005,
मूल्यांकन/भाषा परीक्षणों के प्रकार,
गंभीर परीक्षण अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ,
अध्यापक-परीक्षक तथा मूल्यांकक के रूप में,
परीक्षण विकास,
भाषा में एक मान्य एवं विश्वसनीय परीक्षण का निर्माण,
श्रवण कौशल का मूल्यांकन,
भाषण कौशल का मूल्यांकन,
पठन कौशल का मूल्यांकन,
लेखन कौशल का मूल्यांकन,
शब्द-संपदा का परीक्षण,
संप्रेषणात्मक भाषा शिक्षण और परीक्षण,
संप्रेषणात्मक कौशलों का परीक्षण,
सतत एवं बहुविध मूल्यांकन,
प्रारंभिक भाषा शिक्षार्थियों का आकलन
प्रारंभिक स्तर पर छात्र-मूल्यांकन में समस्याएँ, आदि।

एस.सी.ई.आर.टी., गंगटोक, सिक्किम में पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रशिक्षणार्थी

विद्यालयी शिक्षा संबंधी आँकड़ों का संकलन

सातवें अखिल भारतीय विद्यालयी शिक्षा सर्वेक्षण के निष्कर्षों का प्रसार करने के लिए, एन.सी.ई.आर.टी. में 11-12 दिसंबर 2006 को राज्य सर्वेक्षण अधिकारियों की एक-दो दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया।

राज्यों की रिपोर्टों के प्रारूप को तैयार करने और उसके प्रचार-प्रसार के बारे में चर्चा की गई। एक पूरा, सत्र राज्यों द्वारा अनुभव की गई वित्तीय समस्याओं के समाधान पर विचार करने के लिए रखा गया। इस बैठक में 21 राज्य सर्वेक्षण अधिकारियों अथवा उनके प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक का उद्घाटन प्रो. जी. रवीन्द्र, संयुक्त निदेशक, एनसीईआरटी ने किया। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र की ओर से डॉ. गौतम बोस उप महानिदेशक, रा.पू.वि.कें. ने भाग लिया।

शैक्षिक सर्वेक्षण और आँकड़ा प्रक्रिया विभाग ने निम्नलिखित नौ रिपोर्टों में विद्यालयी शिक्षा के भिन्न-भिन्न पक्षों पर सर्वेक्षण के राष्ट्रीय आँकड़े संकलित किए :

(i) ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयी शिक्षा की सुविधाएँ;
(ii) विद्यालयों में भौतिक तथा आनुषंगिक सुविधाएँ;
(iii) प्रोत्साहन योजनाएँ;
(iv) विद्यालयों में नामांकन;
(v) शिक्षा के माध्यम और पढ़ाई जाने वाली भाषाएँ;
(vi) अध्यापक और उनकी योग्यताएँ;
(vii) शारीरिक दृष्टि से चुनौतीग्रस्त बच्चों के लिए विद्यालय;
(viii) माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में विशिष्ट सुविधाएँ;
(ix) पूर्व-प्राथमिक शिक्षा और वैकल्पिक विद्यालयी शिक्षा।

परीक्षा प्रणाली को अधिक लचीला बनाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार हम यह सुनिश्चित करते हैं कि शिक्षा और मूल्यांकन प्रणाली सभी सामाजिक समूहों के लिए निष्पक्ष होनी चाहिए, उसी प्रकार हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि ये प्रणालियाँ किसी खास प्रकार के शिक्षार्थियों के साथ भेदभाव तो नहीं बरततीं। यह दर्शाने के लिए पर्याप्त मात्रा में मनोवैज्ञानिक आँकड़े (डाटा) उपलब्ध हैं कि भिन्न-भिन्न किस्मों के शिक्षार्थी भिन्न-भिन्न रीति से सीखते हैं, इसलिए सभी शिक्षार्थियों को एक ही प्रकार के लिखित परीक्षण के माध्यम से जाँचना न्यायोचित नहीं है।

–रा.पा.रू. 2005 खंड-2

उच्चतर मानसिक क्षमताओं के लिए उदाहरणात्मक प्रश्नों का विकास

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में यह लिखा गया है कि इस समय भिन्न-भिन्न विषय-क्षेत्रों में छात्रों की उपलब्धि की जाँच करने के लिए जो प्रश्न पूछे जाते हैं वे अधिकतर स्मृति-आधारित होते हैं। उनमें तर्कशक्ति, रचनात्मक सोच, ज्ञान के अनुप्रयोग, निर्वचन, निगमन आदि जैसे अधिज्ञानात्मक कौशलों की उपेक्षा की जाती है। इसलिए अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया में परिवर्तन लाने और छात्रों को ज्ञान के निर्माण का अवसर प्रदान करने के लिए, प्रश्न की प्ररूपता (टाइपोलॉजी) में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। अत: विद्यालयी अध्यापक को नए प्रकार के प्रश्नों से परिचित कराने के लिए, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग ने दिसंबर 2006 में आयोजित एक कार्यशाला में, माध्यमिक स्तर पर अंग्रेज़ी, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और गणित के विषय-क्षेत्रों में उदाहरणात्मक प्रश्न तैयार किए। फ़रवरी-मार्च में होने वाली एक परवर्ती कार्यशाला में इन प्रश्नों का पुनरीक्षण/संशोधन किया जाएगा और उसके बाद उन्हें एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करके व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

प्रश्नपत्रों के निर्माण में प्रमुख विषय-विशेषज्ञों की क्षमता का विकास

शैक्षिक मूल्यांकन से संबंधित क्षेत्रों में राज्यों के विषय-विशेषज्ञों की क्षमता का निर्माण करना शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग का एक प्रमुख कार्य है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में प्रश्नों के प्रारूप में परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिए जाने के कारण प्रश्नपत्र निर्माण के कार्य में भिन्न-भिन्न राज्यों के प्रमुख विषय विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना अनिवार्य हो गया। इस हेतु बिहार, असम और मिजोरम के विद्यालयी शिक्षा बोर्डों के साथ मिलकर, क्षमता-निर्माण हेतु तीन कार्यक्रम क्रमश: 4-8 सितंबर 2006, 10-14 नवंबर 2006 और 20-24 नवंबर 2006 के दौरान आयोजित किए गए। ऐसी प्रत्येक कार्यशाला में, लगभग 50 प्रमुख विषय विशेषज्ञों को विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित और भाषा के विषयों में उच्चतर मानसिक क्षमताओं की जाँच करने के लिए प्रश्न तैयार करने के कार्य में प्रशिक्षित किया गया। प्रत्येक राज्य इस कार्यक्रम की एक रिपोर्ट तैयार करेगा जिसमें विद्यालयों में प्रचार-प्रसार हेतु नमूने के प्रश्न दिए जाएँगे।

बच्चों के लिए 33वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी-2006

बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी हर वर्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन मनाने के लिए आयोजित की जाती है। इस प्रदर्शनी का मुख्य प्रयोजन देश के भिन्न-भिन्न भागों में बच्चों को विभिन्न वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय आशुव्यवस्थाओं तथा नवाचारों से परिचित कराना और उन्हें नए-नए आविष्कारों तथा खोजों की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना है। प्रदर्शनी सरल मॉडलों और जुगतों के बारे में भी जानकारी देती है। 33वीं प्रदर्शनी-2006 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा महाराष्ट्र सरकार के सहयोग से आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी का मुख्य प्रतिपाद्य विषय था : 'ग्रामीण विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी'।

यह प्रदर्शनी छत्रपति शिवाजी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, बालेवाडी, पुणे में आयोजित की गई। महाराष्ट्र के माननीय शिक्षा मंत्री श्री वसंत पुरके ने 23 नवंबर 2006 को प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक प्रो. कृष्णकुमार ने अपने उद्घाटन भाषण में, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के प्रति छात्रों तथा जनसाधारण में रुचि उत्पन्न करने में ऐसी प्रदर्शनियों की भूमिका एवं महत्व पर बल दिया। शिक्षा की एक सुविचारित औपचारिक प्रणाली विज्ञान शिक्षा के वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं होती। औपचारिक प्रणाली के कठोर एवं सैद्धांतिक पाठ और अक्सर अपर्याप्त प्रदर्शन एवं प्रयोग स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु बच्चों को वैज्ञानिक अन्वेषण के आनंद एवं कुतूहल में शामिल होने का अवसर प्रदान नहीं करते।

प्रदर्शों के विषय

पर्यावरण प्रबंधन,
ग्रामीण विकास के लिए उद्योग,
विज्ञान में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ,
शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी,
गणितीय मॉडल,

विज्ञान प्रदर्शनियाँ छात्रों को अपने रचनात्मक विचारों की अभिव्यक्ति और आदान-प्रदान करने, वैज्ञानिक रीतियों को समझने में सहायता देने और उनमें समस्या समाधान करने के कौशलों और रचनात्मक योग्यताओं का विकास करने के अवसर प्रदान करती है। विख्यात कंप्यूटरविज्ञानी डॉ. विजय

रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जिनमें पुणे तथा देश के अन्य भागों से अनेक प्रस्तुतियाँ शामिल थीं:

भाटकर और पुणे विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. नरेन्द्र जाधव ने भी सहभागियों को संबोधित किया। माननीय शिक्षा मंत्री और प्रो. कृष्णकुमार ने भी प्रदर्शनी का अवलोकन किया और अनेक सहभागियों से बातचीत की। एक लाख से अधिक छात्रों, अध्यापकों और अभिभावकों ने प्रदर्शनी को देखा। अनेक विख्यात विज्ञानियों और शिक्षाविदों ने सहभागियों के साथ अंत:क्रिया की।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) द्वारा तैयार की गई आठ सौ से अधिक शैक्षिक सीडियों की बिक्री हुई। ये सीडियां भिन्न-भिन्न वर्गों एवं समूहों के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए विभिन्न विषयों पर तैयार की गई थीं।

33वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी 2006 का समापन समारोह 29 नवंबर 2006 को आयोजित किया गया जिसमें सहभागियों को प्रमाणपत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए। समापन समारोह में, महाराष्ट्र के माननीय शिक्षा मंत्री श्री वसंत पुरवे; संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., प्रो. जी. रवीन्द्र, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. श्री ए. एम. बेडगे और विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के प्रोफ़ेसर हुकुम सिंह ने सहभागियों को संबोधित किया।

'एडुसैट' के लिए तकनीकी प्रशिक्षण

सी.आई.ई.टी. (एन.सी.ई.आर.टी.) के पास अपना 'एडुसैट' नेटवर्क है, जो देशभर के एन.सी.ई.आर.टी. एवं एस.आई.ई.टी. संस्थानों, केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों, ए.आई.ओ.एस. और सी.बी.एस.ई. आदि में स्थित 100 क्लासरूम सैटेलाइट इंटरएक्टिव टर्मिनलों (एस.आई.टी.) से जुड़ा है। इस नेटवर्क के प्रभावशाली प्रयोग का प्रशिक्षण देने के लिए उसके परिचालनात्मक पहलुओं पर एक तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम सी.आई.ई.टी. के टी.पी.ओ.एम. प्रभाग द्वारा दो चरणों में सक्रियकृत केंद्रों के लिए आयोजित किया गया।

प्रथम चरण में, 28 केंद्रों के 46 समन्वयकर्ताओं (तकनीकी) को 22 से 28 जून 2006 तक प्रशिक्षित किया गया। दूसरे चरण में भी 27 केंद्रों के 46 समन्वयकर्ताओं (तकनीकी) को 26 से 29 दिसंबर 2006 तक प्रशिक्षित किया गया।

भारत के पत्तनों और आयुर्विज्ञान तथा शल्यक्रिया विषयों पर ऑडियो कार्यक्रम

सी.आई.ई.टी. ने भारत के पत्तनों (बंदरगाहों) पर 10 वीडियो कार्यक्रमों और आयुर्विज्ञान तथा शल्यक्रिया पर सात वीडियो कार्यक्रमों की शृंखलाएं तैयार की हैं। भारत के पत्तन विषयक कार्यक्रमों का उद्देश्य विभिन्न पत्तनों की अवस्थिति, इतिहास, प्रकार और अपने क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में उनके महत्व आदि का चित्रण करना है। ऑडियो कार्यक्रमों में पत्तनों के निर्माण, सड़कों तथा रेलवे जैसी अन्य आधारभूत सुविधाओं की व्यवस्था और औद्योगिक तथा तत्संबंधी आर्थिक कार्यकलापों की प्रक्रिया का विशद विवरण दिया गया है। ये कार्यक्रम विद्यालय स्तर पर शिक्षार्थियों को सामाजिक निविष्टियों के बारे में शिक्षा देने के लिए उपयोगी होंगे।

भारत के पत्तनों के बारे में तैयार किए गए श्रव्य-दृश्य कार्यक्रमों के शीर्षक :

1. भारत के बंदरगाह–एक परिचय
2. कांडला
3. मुंबई
4. मारमागोआ
5. कोची
6. तूतीकोरीन
7. चेन्नई
8. विशाखापटनम
9. पारादीप
10. कोलकाता

इसके अलावा 10 से 14 वर्ष के आयु-वर्ग के युवा शिक्षार्थियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आयुर्विज्ञान तथा शल्य चिकित्सा के अनेक विषयों पर सात ऑडियो कार्यक्रमों की भी एक शृंखला तैयार की गई। इन कार्यक्रमों का शैक्षिक उद्देश्य आयुर्विज्ञान तथा शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए अत्यंत महत्वपूर्ण अन्वेषणों एवं आविष्कारों पर ध्यान केंद्रित करना है।

आयुर्विज्ञान तथा शल्यचिकित्सा के बारे में तैयार किए गए श्रव्य-दृश्य कार्यक्रमों के शीर्षक :

1. खोज एक, पहलू अनेक
2. आवाज़ से पहचानना रोग
3. ऐंटीबायोटिक की कहानी
4. बचाव में है सुरक्षा
5. एक बड़ी जीत
6. वह बारिश का दिन
7. हँसते-खेलते बच्चे

पुस्तकाधार

डॉ. मोहम्मद नौमान खान, रीडर, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., ने 'तलाश ओ-ताजज़िया' नाम से, साहित्यिक निबंधों तथा शोधपत्रों का एक संग्रह प्रकाशित किया है।

ये रचनाएँ उर्दू पत्रिकाओं में प्रकाशित की गई थीं और इन्हें विश्वविद्यालयों, उर्दू अकादमियों तथा साहित्यिक संगठनों द्वारा आयोजित संगोष्ठियों में प्रस्तुत किया गया था। यह पुस्तक दास्ताने, भोपाल द्वारा 2006 में प्रकाशित की गई है।

इन साहित्यिक रचनाओं एवं शोधपत्रों में समकालीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है जिससे यह विचारोत्तेजक बन गई है।

पुस्तक में चर्चित कुछ विषय :

कालिदास और उर्दू अदब
भर्तृहरि और इकबाल
सर सैयद अहमद
शिबली नोमानी
अबुलकलाम आज़ाद
डॉ. इकबाल
मुल्ला रमज़ी
उर्दू प्रिंट मीडिया
उर्दू एजुकेशनल सिनेरियो इन मध्य प्रदेश।

हिंदी पखवाड़ा

14 से 28 सितंबर 2006 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े में एन.सी.ई.आर.टी. स्टॉफ के लिए अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता ये हैं :

सुलेख प्रतियोगिता : घ समूह

प्रथम : वाई.पी. जोशी, सचिव कार्यालय
द्वितीय : प्रकाशचन्द्र, लेखा अनुभाग
तृतीय : अशोक कुमार, प्रारंभिक शिक्षा विभाग

सुलेख प्रतियोगिता : टंकक से अनुभाग अधिकारी तक का समूह

प्रथम : रेखा निर्वाण सी.आई.ई.टी., प्रशासन
द्वितीय : इन्देश सिंह, प्रकाशन प्रभाग
तृतीय : साहिबसिंह बिष्ट, संसदीय कार्य अनुभाग

निबंध लेखन : प्रशासन

प्रथम : वीना कुमार, अ.जा./अ.ज.जा. प्रकोष्ठ
द्वितीय : विनोद कुमार, संसदीय कार्य अनुभाग
तृतीय : रचना, कल्याण अनुभाग

टंकण : द्विभाषी

प्रथम : मनीश कुमार, पाठ्यचर्या समूह
द्वितीय : रामप्रकाश, मा.सं.वि.मं.
तृतीय : हरिनारायण, स्थापना कल्याण अनुभाग

हिंदी अनुवाद : प्रशासन

प्रथम : रामप्रकाश, मा.सं.वि.मं.
द्वितीय : मनीश कुमार, पाठ्यचर्या समूह
तृतीय : गुरप्रीत सिंह, संकलन अनुभाग, लेखा शाखा

प्रारूपण

प्रथम : करुणेश गंभीर, नियुक्ति-I अनुभाग
द्वितीय : जयकृष्ण सैनी, स्थापना-कल्याण अनुभाग
तृतीय : मदन सिंह यादव, डी.ई.आर.पी.पी., डी.एन. भट्ट डी.सी.ई.टी.ए.

वादविवाद : प्रशासन

प्रथम : उषा गौड़, डी.ई.एस.एस.ए.ए.
द्वितीय : शराफत अली, डी.एल.डी.आई.
तृतीय : मदनसिंह यादव, डी.ई.आर.पी.पी.

कविता पाठ : प्रशासन

प्रथम : नीलिमा वलेचा, डी.ई.ई.
द्वितीय : गुरप्रीत सिंह, संकलन अनुभाग लेखाशाखा
तृतीय : सागर पाराश्री, प्राप्ति-प्रेषण अनुभाग

पुरस्कार विजेता कविता

बेटियाँ

बड़ी बेटियाँ–बेटी कम
अधिक सहेली हो जाती हैं,
जब घर में केवल बेटे हों, माएँ
और अकेली हो जाती हैं!

शोर-शराबे वाले घर में
बेटी चुप का कोना है
बेटी का होना ही घर में
पूरे घर का होना है
चुप-चुप रहती हुई बेटियाँ
मां की चेली हो जाती हैं!

मन उड़ने का कभी हुआ तो
पंख धरे बेटी के मिलते
माँ के घाव नहीं दिखते हैं
घाव हरे बेटी के मिलते
जब भी टीस बढ़ी दाँतों में
दवा की गोली हो जाती हैं!

अपना हिस्सा नहीं माँगतीं
खुद हिस्सा बन जाती हैं
माँ की आँखें वो छलनी हैं
जहाँ बेटियाँ छन जाती हैं
माँ को घर में कैद देखकर
खुली हवेली हो जाती हैं

उन्हें पता है दर्द कहाँ है
किस शीशी में दवा कहाँ है
धूप कहाँ बीमार पड़ी है
और रो रही हवा कहाँ है
माँ का चेहरा जब हँसता है
खिली चमेली हो जाती हैं!

औरत से औरत का रिश्ता
बिन कहे सब कह जाता है
नाली से आँगन का पानी
धीरे-धीरे बह जाता है!
माँ बनतीं जब फूल, बेटियाँ
खुली हथेली हो जाती हैं!

बड़ी बेटियाँ–बेटी कम
अधिक सहेली हो जाती हैं!

नीलम वलेचा

दूरदृष्टि

मार्गदर्शन एवं काउंसेलिंग (परामर्श) में अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम

निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में प्रशिक्षित परामर्शदाताओं/काउंसेलरों की माँग बराबर बढ़ती जा रही है। इसलिए उन्हें बड़े पैमाने पर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। प्रो. कृष्ण कुमार जो कि कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सी.ओ.एल.) के सहयोग से दूरस्थ/ऑनलाइन रीति से मार्गदर्शन एवं काउंसेलिंग के अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम की सलाहकार समिति के अध्यक्ष हैं, ने विशेष रूप से विकासशील देशों में युवाओं की आज की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले एक सुसंगत पाठ्यक्रम के महत्त्व पर सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया। तदनुसार, काउंसेलिंग के लिए महत्त्वपूर्ण संदर्भगत कारकों तथा समसामयिक सरोकारों के बारे में अध्यापकों को संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। छात्रों को मार्गदर्शन तथा परामर्श देने के लिए यह ज़रूरी है कि पाठ्यक्रम की सामग्री सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और संदर्भगत पहलुओं तथा बाहरी दुनिया की अन्य जटिलताओं और वास्तविकताओं पर केंद्रित हो। इस दूरदृष्टि को ध्यान में रखते हुए, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग सी.ओ.एल. के सहयोग से दूरस्थ/ऑनलाइन रीति से मार्गदर्शन एवं उपबोधन में एक अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की तैयारी कर रहा है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य एशियाई तथा अफ्रीकी क्षेत्रों के अध्यापकों/अध्यापक प्रशिक्षकों और अप्रशिक्षित काउंसेलिंग कार्मिकों को काउंसेलर/अध्यापक काउंसेलरों के रूप में प्रशिक्षण देना है।

इस पाठ्यक्रम की सलाहकार समिति की एक बैठक 8 नवंबर 2006 को हुई, जिसमें एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक, संयुक्त निदेशक, वरिष्ठ संकाय सदस्यों और एन.सी.ई.आर.टी. तथा अन्य विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

समिति ने 2008-09 वर्ष के मध्य तक पाठ्यक्रम चालू करने, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों/राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं में उपलब्ध संसाधनों को एकत्र करने और पाठ्यक्रम के संचालन के लिए भारत तथा दक्षिणी एशिया में अध्ययन केंद्र स्थापित करने के बारे में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 पर अभिविन्यास कार्यक्रम

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 पर एक दो-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम डी.ए.वी. स्कूलों के प्रधानाचार्यों/वरिष्ठ विभागाध्यक्षों के लिए पाठ्यचर्या समूह द्वारा 27-28 नवंबर 2006 को आयोजित किया गया। आंध्र प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के डी.ए.वी.-स्कूलों के लगभग 55 प्रधानाचार्यों/वरिष्ठ विभागाध्यक्षों ने इस अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर, प्रो. कृष्णकुमार ने रा.पा.रू.-2005 के कार्यान्वयन पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए, सूचना, ज्ञान और समझ के बीच के सूक्ष्म अंतर पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, वास्तविक आनंद का अनुभव तभी हो सकता है जब इसे समझा जाए कि हम क्या कर रहे हैं या सीख रहे हैं।

प्रो. खादर ने इस बात पर बल दिया कि गुणवत्ता लाने के लिए मानसिकता में बदलाव और शिक्षण प्रक्रिया को महत्वपूर्ण मानना आवश्यक है। प्रो. अग्निहोत्री के अनुसार भाषाओं के प्रति अपनाया गया दृष्टिकोण रा.पा.रू. 2005 का विशिष्ट लक्षण है, क्योंकि वहां बहुभाषावाद को एक संसाधन और रणनीति माना गया है। प्रो. अनिल सदगोपाल का कहना था कि पाठ्यचर्या तथा शिक्षणविधि में सुधार तभी लाए जा सकते हैं जब संरचनात्मक सुधार हो जाएँ। इस संबंध में सामान्य विद्यालय प्रणाली (कॉमनस्कूल सिस्टम) एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। सुश्री शुभा मुद्गल ने शिक्षा प्रणाली को अधिक आनंददायक बनाने में कला शिक्षा की भूमिका पर बल दिया, जहाँ यह महत्त्वपूर्ण होता है कि विद्यार्थी प्रदर्शन करने से पहले स्वयं जानकार श्रोता बनें।

कार्यक्रम के दौरान जो भी प्रस्तुतियाँ और चर्चाएँ की गईं, वे रा.पा.रू. 2005 की प्रमुख विशेषताओं, विभिन्न विषयों के पाठ्यविवरण और पाठ्यपुस्तकों, परीक्षा सुधारों, पाठ्यचर्या के नवीकरण के लिए अध्यापक शिक्षा, कार्य-केंद्रित शिक्षा और गुणात्मक शिक्षा पर केंद्रित थीं।

प्रो. जी.एस. गिल, प्रो. बी.के. शर्मा, प्रो. एस.के.एस. गौतम, डॉ. वी.पी. सिंह, प्रो. अनिल सेठी, प्रो. अनिल सदगोपाल, प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री, श्री नसीरुद्दीन खान, डॉ. ज्योत्स्ना तिवारी और श्री एन.वी. श्रीनिवासन ने विभिन्न सत्रों के दौरान सहभागियों के साथ विचारों का आदान-प्रदान किया। डी.ए.वी. सी.एम.सी. से डॉ. सी. प्रकाश (उपाध्यक्ष), श्री एम.एल. खन्ना (महासचिव), ब्रिगेडियर ए.के. अधलखा (निदेशक, प्रशासन) और श्रीमती रश्मि चारी (सहायक निदेशक) इस कार्यक्रम के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे।

पाठ्यपुस्तकों में हास्य-विनोद

भाषा विभाग में कार्यरत डॉ. वरदा एम. निकलजे ने गुरुवारीय मंच में हमारी नयी पाठ्यपुस्तकों में हास्य-विनोद की मौजूदगी पर अपने विचार प्रस्तुत किए। संक्षेप में, उन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य में भी इसकी उपस्थिति की खोज की। वे इस विषय पर अपना भाषण देने के लिए 'लर्निंग विदाउट बर्डन' नामक रिपोर्ट (1993) में दी गई इस टिप्पणी से प्रेरित हुईं कि भारतीय पाठ्यपुस्तकों में आमतौर पर हास्य रस का अभाव रहता है। इस मुद्दे पर विचार करने का प्रयास किया गया। उनके भाषण का प्रथम भाग पाठ्यपुस्तकों में हास्य-विनोद के अभाव के उन कारणों पर केंद्रित था जो नीचे वर्गीकृत हैं :

(i) शिक्षा-शास्त्र में परंपरा : विद्यालयों से समाज की आशाएँ, पुरानी पीढ़ी से युवापीढ़ी द्वारा ज्ञान तथा कौशल के आदान-प्रदान तक ही सीमित थीं। विद्यालयों का संबंध हँसी-खुशी से नहीं, बल्कि गंभीरता और अध्ययन से ही बना रहा।

(ii) साहित्यिक परंपरा : समय के साथ-साथ हास्य की परिभाषा भी बदल गई; अब इसका अर्थ व्यवहार या रीति का अनोखापन नहीं, बल्कि यह है कि लेखक इस अनोखेपन का कैसा उपयोग करता है। पंचतंत्र से चार्ल्स लैब तथा मार्क ट्वैन तक के समृद्ध साहित्य से हास्य के उदाहरण लेकर उन पर चर्चा की गई।

भाषण के दूसरे भाग में 2005-06 के दौरान कक्षा-I, III, VI, IX और XI के लिए प्रकाशित अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण किया गया। उदाहरण के लिए, कक्षा III की पाठ्यपुस्तक 'मैरीगोल्ड' में, 'दि बबल, दि स्ट्रॉ एंड दि शू' कहानी में जब जूता (शू) तिनके (स्ट्रॉ) पर कूदा तो वह टूट गया। जूता डूब गया और बुलबुला (बबल) तब तक हंसता रहा जब तक कि वह फट न गया। घटिया हास्य से व्यंग्य तक के विभिन्न हास्य-रूपों और विभिन्न स्तरों पर उनकी उपयुक्तता का विश्लेषण किया गया।

चर्चा के दौरान प्रो. एम. सेनगुप्ता ने कक्षा में ऐसी स्थितियों का उदाहरण पेश किया जो हास्य पर रोक लगा देती हैं। श्री एन. खान ने अपने उदाहरण में यह बताया कि संवेदनहीन अध्यापन हास्य को किस तरह खत्म कर देता है। प्रो. उषा दत्ता ने प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में मौजूद हास्य के बारे में दिए गए उदाहरणों की प्रशंसा की।

कर्मचारियों से संबंधित समाचार

नियुक्तियाँ

- श्री शंकरलाल मीणा को दिनांक 11-12-2006 से क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर में भौतिक विज्ञान विभाग में (छुट्टी की रिक्ति में) व्याख्याता के पद पर नियुक्त किया गया।
- डॉ. अशिता रवींद्रन को दिनांक 22-12-2006 से सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग में अर्थशास्त्र के व्याख्याता पद पर नियुक्त किया गया।
- श्री एम.एस. कालिदास को दिनांक 26-12-2006 से क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल में गुजराती के व्याख्याता पद पर नियुक्त किया गया।

पदोन्नतियाँ

- श्री एस.बी. शर्मा, सहायक को दिनांक 13-11-2006 से अनुभाग अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्रीमती प्रेम साहनी को दिनांक 15-11-2006 से अनुभाग अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्री जितेन्द्र कुमार सैनी, अवर श्रेणी लिपिक को दिनांक 12-10-2006 से उच्च श्रेणी लिपिक के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्री सुमंत कुमार थपलियाल, अवर श्रेणी लिपिक को दिनांक 05-12-2006 से उच्च श्रेणी लिपिक के पद पर पदोन्नत किया।
- श्री बी.आर. टुटेजा निजी सहायक को दिनांक 14-11-2006 से ए.पी.सी. के पद पर पदोन्नत किया गया।

सेवा-निवृत्तियाँ

- श्री एम.के. गुप्त, व्याख्याता (प्रवरण कोटि) डीईस एंड डी.पी., दिनांक 30-11-2006 को सेवानिवृत्त हुए।
- श्री डॉ. एस.एस. राघवन, प्रोफ़ेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर, दिनांक 31-12-2006 को सेवानिवृत्त हुए।
- श्री एस.पी. भाटिया, सहायक, दिनांक 31-10-2006 को सेवानिवृत्त हुए।
- श्री हरीशचंद्र, अनुभाग अधिकारी दिनांक 31-10-2006 को सेवानिवृत्त हुए।
- श्री पृथ्वी, सहायक दिनांक 31-11-2006 को सेवानिवृत्त हुए।

पिछला हाशिया

परिषद द्वारा हाल में आयोजित एक भाषण में प्रोफ़ेसर शांता सिन्हा ने कहा कि गरीबों के लिए बच्चों को विद्यालय भेजना एक युद्ध से कम नहीं होता। जन्म और निवास के संतोषजनक प्रमाणपत्रों, आदि के साथ आखिरी तारीख से पहले प्रवेश के लिए फार्म भर देना जैसी ज़रूरी शर्तें हर माता–पिता को पहली कक्षा में अपना बच्चा दाखिल कराते समय पूरी करनी होती है। ग्रामीण जन तथा छोटे शहरों और महानगरों में आकर बसे लोगों के लिए इन शर्तों को पूरा करना काफ़ी दुश्वार होता है। लेकिन असली लड़ाई तब शुरू होती है जब बच्चा पहली कक्षा में जाने लगता है। एम.वी. फाउंडेशन की संस्थापक–निदेशक के रूप में अपने काम के दौरान मिले अनुभवों से अनेक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए प्रोफ़ेसर शांता सिन्हा ने बताया कि पहली कक्षा के बच्चों को भावनात्मक संबल और प्रोत्साहन की कितनी कमी महसूस होती होगी।

गाँव के कई स्कूल तो सिर्फ़ दो अध्यापकों से ही काम चलाते हैं और आमतौर पर अपना ध्यान चौथी और पाँचवीं कक्षा पर ही केंद्रित रखते हैं, यानी वे पहली कक्षा को – जो स्कूल की सबसे बड़ी कक्षा होती है – बच्चों के भरोसे छोड़ देते हैं। यही कक्षा अगले वर्ष घिस–पिटकर दूसरी कक्षा के रूप में छोटी हो जाती है। पहली व दूसरी कक्षाओं में पढ़ाने वाले बहुत कम अध्यापकों में वैसा आत्मगौरव और भविष्यदृष्टा होने का भाव मिलता है जो 5–6 वर्ष की उम्र के बच्चों के साथ काम करने के लिए बहुत ज़रूरी है। हमारे देश में पहली व दूसरी कक्षा में शामिल की जाने वाली बहुत सी पाठ्यपुस्तकें सोच और कल्पना के उन तरीकों का प्रतिबिंबन नहीं करतीं जिन्हें छोटे बच्चे स्वाभाविक रूप से जानते हैं। प्रधानाध्यापकों व अन्य अधिकारियों के मन में आमतौर से यह भावना छाई रहती है कि पहली कक्षा तो आगे की तैयारी का समय है; अपने आप में इस कक्षा का कोई महत्त्व नहीं है। लेकिन शिक्षाशास्त्र के सिद्धांत इसके ठीक विपरीत बात करते हैं। उनके अनुसार पहली कक्षा ही एक सामाजिक संस्था के रूप में विद्यालय के प्रति बच्चे का बुनियादी रवैये को आकार देती है। स्कूल में बीतने वाले आरंभिक महीने बच्चों के इस संकल्प को पक्का बनाने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं कि वे विद्यालय को एक संजीदगी के साथ, एक भली जगह के रूप में स्वीकार करेंगे।

स्वभाव और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की दृष्टि से छोटे बच्चों और बड़े छात्रों में फ़र्क न कर पाना एक बड़ी व्यवस्थागत कमज़ोरी है जो पहली कक्षा के सुधार के रास्ते में एक बड़ी बाधा को पेश करती है। कई शिक्षित अध्यापक किशोर छात्रों की सामान्य मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को मौखाग्र सुना सकते हैं, लेकिन इस बात का व्यावहारिक ज्ञान बहुत कम अध्यापकों में मिलता है कि पाँच साल का बच्चा किस तरह सोचता और कल्पना करता है। प्राथमिक स्तर के लिए अध्यापक प्रशिक्षण की पाठ्यचर्या प्राय: इतनी सपाट होती है कि प्रशिक्षण पूरा कर लेने पर भी अध्यापक को स्कूल में प्रवेश लेने वाले बच्चों की कोमल मानसिक दशा का अंदाज़ नहीं होता। ज़्यादातर अध्यापक बाल विकास के रूढ़ चरणों की अपनी अस्पष्ट जानकारी से ही काम चलाते हैं। उन्हें यह जानकारी नहीं होती कि एक वास्तविक बच्चे के साथ कैसे व्यवहार किया जाए। इसके लिए हम पहली कक्षा के उन अध्यापकों को दोष नहीं दे सकते जो अपने आपको स्कूली व्यवस्था के पदक्रम में सबसे नीचे समझते हैं और आगे भी ऐसा ही समझने की उम्मीद रखते हैं।

कृष्ण कुमार

गुरुवारीय व्याख्यानमाला

अक्तूबर 2006 से दिसंबर 2006 तक गुरुवारीय मंच के अंतर्गत आयोजित व्याख्यान/कार्यकलाप :

- पाठ का अर्थ विस्तार और विषयों का अंतर्संबंध; वक्ता: डॉ. पी. के. दूबे, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., दिनांक 19 अक्तूबर 2006
- ह्यूमर : रूट्स एंड रूट्स थ्रू इंगलिश लैंग्वेज एंड लिटरेचर; वक्ता : डॉ. वरदा एम. निकलजे, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., दिनांक 2 नवंबर 2006
- 'संत ज्ञानेश्वर' पर फ़िल्म शो, दिनांक 9 नवंबर 2006
- लर्निंग एचीवमेंट ऑफ क्लास III; वक्ता: प्रो. अवतार सिंह, डॉ. वीरपाल सिंह और डॉ. संतोष कुमार, एन.सी.ई.आर.टी. दिनांक 16 नवंबर 2006
- नेशनल एजुकेशन क्वालिटी इनीशिएटिव इन साउथ अफ़्रीका: इट्स रोल इन इम्प्रूविंग दि क्वालिटी एजुकेशन; वक्ता : प्रो. कानजी, एक्जीक्यूटिव डाइरेक्टर, साउथ अफ़्रीका, दिनांक 27 नवंबर 2006
- 'ग्रेट इंडियन स्कूल्स' पर फ़िल्म प्रदर्शन, श्री अविनाश देशपांडे पुणे, द्वारा वृत्तचित्र, दिनांक 30 नवंबर 2006
- प्रोग्रेस मैप्स इन करिक्यूलम डेवलपमेंट: साउथ अफ्रिकन एक्सपीरिएंस ; वक्ता : डॉ. बीट्रिस ऐवेलॉस, प्रिटोरिया विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ़्रीका, दिनांक 1 दिसंबर 2006
- टीचिंग स्टैटिस्टिकल इन्क्वायरी इन स्कूल्स; वक्ता : प्रो. कैटी एम. माकर, क्वीन्सलैंड विश्वविद्यालय, दिनांक 21 दिसंबर 2006

प्रकाशन मंडल

पी. राजाकुमार | रेखा अग्रवाल
नीरजा रश्मि | अरुण चितकारा
श्वेता उप्पल

वेबसाइट: www.ncert.nic.in, ई-मेल: publica@nda.vsnl.net.in

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा गीता ऑफ़सेट प्रिंटर्स, सी–90, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़–1, नयी दिल्ली–20 में मुद्रित।